राग और रस

मंथन के पाठकों को मेरा नमस्कार | पिछला आलेख 'बंदिश देख कर गाना ' इस सूत्र पर आधारित था | अब एक विषय पर आपसे संवाद निर्माण करना चाहूँगी, वह विषय है -- राग और रस, या यों कहें कि राग में रस|

इस विषय पर बहुत चर्चा होती रहती है| कुछ समय तक चलती है, फिर समाप्त हो जाती है और फिर थोड़े समय पश्चात पुन: आरम्भ हो जाती है| अर्थात यह विषय पाठकों और श्रोताओं की रूचि को आकर्षित करता रहा है|

क्या राग में विशिष्ट रस होता है? अर्थात क्या किसी एक राग में कोई एक रस होता है, उस राग के गायन , वादन से वह रस पैदा होता है? क्या ऐसा होना सम्भव है? यही सब विचार या प्रश्न हैं जिनपर हम आज चर्चा करेंगे| पहले हम देखेंगे कि साहित्य में रस की जो चर्चा की जाती रही है वे कौन से और कितने रस हैं| श्रृंगार , वीर, करूण, बीभत्स, रौद्र, हास्य, भयानक, अद्भुत और शांत ये नौ रस साहित्य में माने जाते रहे हैं|

अब साहित्य में --- पुराने जमाने की शब्द प्रणाली में साहित्य को काव्य शास्त्र कहा जाता था -- अत: कहें कि काव्य शास्त्र में ये जो नौ रस माने गए हैं उनकी अभिव्यक्ति साहित्य [काव्य शास्त्र] में शब्दों के मध्यम से होती थी| संगीत अर्थात गायन और स्वर वाद्यों में यह अभिव्यक्ति स्वरों के मध्यम से होती है|यहाँ मैं तबला और पखावज का जिक्र इसलिए नहीं कर रही हूँ क्योंकि उन के द्वारा अधिक स्वरों की अभिव्यक्ति सम्भव नहीं है -- केवल मूल षड्ज में ही उन्हें मिलाया जाता है और उसी एक स्वर में वे बजते हैं|कुछ विशेष अवसरों पर तबला तरंग आदि की अवतारणा में ताल वाद्यों पर अधिक स्वर भी बजते हैं, किन्तु वह अपवाद के रूप में मानना होगा| यहाँ हम कंठ संगीत एवं स्वर वाद्यों के संदर्भ में ही बात करेंगे|

संगीत में माध्यम केवल स्वर ही हैं और उन्ही से किसी भाव की अभिव्यक्ति की जाना सम्भव है| प्रश्न यह है कि केवल स्वर के माध्यम से हम कौन कौन से भावों को दर्शा सकते हैं! आनंद, उत्सुकता, डर, दुख, विरह, घृणा, जुगुप्सा आदि भावों का प्रकटीकरण क्या स्वरों के मध्यम से किया जा सकता है? शव को देखकर मन में पैदा होने वाला वैराग्य, बहुत बीमार हालत में किसी रोगी को देखने पर मन को हुआ दुख क्या हम स्वरों के द्वारा अभिव्यक्त कर सकते हैं? भगवान की भक्ति में लीन किसी भक्त की भाव -समाधि में डूबी मुद्रा को क्या हम संगीत के माध्यम से प्रगट कर सकते हैं? कूडे के ढेर पर भिनभिनाती मख्खियाँ देख कर मन में पैदा होने वाली घिन या घृणा को क्या संगीत के माध्यम से बताया जा सकता है? किसी प्रणय से अभिभूत प्रेमी प्रेमिका के आलिंगन, चुम्बन आदि क्रिया कलाप क्या संगीत के जरिये प्रगट करना सम्भव है?

मेरे ख्याल से इन भावनाओं को संगीत द्वारा प्रकट करना मुमकिन नहीं होगा| हाँ, यदि हम शब्दों की सहायता लें अर्थात इन भावनाओं को अभिव्यक्त करने वाले शब्दों को सुरों में निबद्ध करके गाया जाये तो वे वे भाव अवश्य प्रकट होंगे| किन्तु ऐसी स्थिति में क्या वह संगीत भक्ति संगीत अर्थात भजन, अभंग आदि नहीं कहलायेंगे? और हम यदि शांति पूर्वक सोचें तो भक्ति संगीत पूर्ण रूप से स्वरों पर आधारित संगीत नहीं होता | वह शब्द प्रधान गायकी के अंतर्गत आता है| हम यहाँ केवल शास्त्रीय संगीत में रस पैदा करना सम्भव है अथवा नहीं इस बात पर विचार कर रहे हैं|

मेरे विचार से हम कुछ उदाहरणों से यह बात स्पष्ट करने का प्रयास करेंगे -- शास्त्रीय संगीत कि बन्दिशों में जो भाव अधिकतर देख पड़ते हैं वे श्रृंगार, करुण, विरह, भक्ति, बात जोहना -- प्रियतम कि या परमात्मा की -- कुल मिलाकर ये ही भाव होते हैं जो हमारी शास्त्रीय संगीत की बन्दिशों में आते हैं|

क्या हम निश्चय पूर्वक कह सकते हैं कि हम उन सब भावों को फ़िल्मी संगीत या भक्ति संगीत के समान अभ्व्यक्त करने में कामयाब होते हैं? आप सभी इस प्रश्न के उत्तर में यही कहेंगे कि संगीत अर्थात अभिजात शास्त्रीय संगीत में स्वरों के द्वारा इतनी परिपूर्ण अभिव्यक्ति सम्भव ही नहीं है। हम कुल मिलाकर एक आनंद के भाव की सृष्टि कर सकते हैं, या कुछ कुछ दुख जैसा भाव कोमल स्वरों के प्रयोग से दिखाया जा सकता है। स्वरों का द्रुत लय में प्रयोग उत्सुकता एवं खुशी के भाव पैदा करने में सफलता प्राप्त कर सकता है। क्या कोई कूड़े के ढेर को देख कर पैदा होने वाली घृणा को स्वरों के किसी तरह के प्रयोग से दर्शा सकेगा? क्या मरे हुए लोगों के मास को नोच नोच कर खाने वाले गिद्ध को देखकर मन में पैदा होने वाली जुगुप्सा कोई स्वरों से प्रगट कर सकेगा? इन प्रश्नों का उत्तर 'ना' में ही देना होगा।

तात्पर्य रूप में हम कह सकते हैं कि साहित्य में शब्दों की सहायता से जिस प्रकार नौ रसों की अवतारणा सम्भव है वैसी सुरों से उत्पन्न करना सम्भव नहीं है। आनंद का भाव, थोड़ा बहुत दुख का भाव पैदा करना यही संगीत की मर्यादा है। वास्तव में संगीत से एकाग्रता, शान्ति ये भावनाएं अवश्य पैदा की जा सकती हैं। निराकार से तादात्म्य की अनुभूति देना संगीत का काम है। संगीत हमें ऐहिक, भौतिक भावों से ऊपर उठाता है। अर्थात संगीत के सुरों के प्रयोग से अथवा उनके श्रवण से हम एक अलग संसार में लीं हो जाते हैं। यही संगीत का उद्देश्य भी है।